हम कौन हैं

श्री माँ का आश्रम आपके हृदय जितना विशाल है। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के साथ, श्री माँ पूजा की विधि और उसका अर्थ सिखाती हैं। श्री माँ और स्वमीजी पूजा की तान्त्रिक परम्परा के अनुसार और ध्यान के द्वारा यह सिखाते हैं कि प्रत्येक घर ईश्वर का मन्दिर है। श्री माँ का आश्रम दुनिया भर के उन साधकों के लिए घर है जो आत्म बोध की तालाश को अपना लक्ष्य मानते हैं।

गुरु मार्ग दर्षण की प्रेरणा और दोष–हीन कर्म का उदाहरण है। जहाँ भी पूर्ण—मिलाप ईश्वर से है, पूर्ण शिक्षा और श्रेष्ट समझ है, वहाँ गुरु उपस्थित है। पूजा उस कार्य को कहते हैं जो आदर पूर्ण ध्यान देकर, निष्कपट और भक्ति पूर्ण व्यवहार के साथ किया जाता है।

ज्ञान गुरु की ओर से शिष्य की ओर बहता है। शिष्य गुरु की शिक्षा की ओर ध्यान देकर पूजा करनी सीखता है। गुरु को आदर देने के लिए शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। शिष्य गुरु का उच्चित सम्मान उनकी शिक्षा के अनुसार जीकर देता है। सम्मान की वस्थु के साथ जुड़ जाना ही श्रेष्टतम सम्मान है। इसलिए शिष्य का लक्ष्य गुरु के उदाहरण का अनुसरण ऐसे करना है कि यह पता न लगे कि कौन गुरु है और कौन शिष्य।

ध्यान को केन्द्रित करने का अभ्यास साधना कहलाता है। साधना के क्षेत्र मे नए साधक यह समझने लगते हैं कि ध्यान को केन्द्रित करना दैनिक जीवन का अंग है। प्यार, आदर, पूजा, सेवा और ध्यान पूर्वक काम से हमारा जीवन अधिक उपयोगी बनता है।